2 जून 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 5 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

51वें शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन संपन्न

खनियांधाना (म.प्र.) : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं श्री नेमिनाथ दिग.जैन नया मंदिर ट्रस्ट और अ.भा.जैन युवा फैडरेशन खनियांधाना द्वारा आयोजित 51वें श्री वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर ज्ञानानन्द महोत्सव का उद्घाटन समारोह दिनांक 21 मई को डॉ. अशोककुमारजी इन्दौर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

शिविर के प्रथम दिन लगभग 1500 साधर्मियों की उपस्थिति में नया जैन मंदिर से विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें एक तरफ पुरुष वर्ग जिनेन्द्र भगवान का रथ लेकर चल रहे थे, वहीं दूसरी ओर महिलाएँ अपने सिर पर मंगल कलश लेकर चल रही थीं। शोभायात्रा नगर में घूमकर कार्यक्रम स्थल श्री नंदीश्वर जिनालय चेतनबाग पहुंची, जहाँ प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी के निर्देशन में श्रीजी का अभिषेक, पूजन करके ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहणकर्त्ता श्री आदेश जैन वत्सल अहमदाबाद (कमिश्नर) थे। शिविर का उद्घाटन श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर की ओर से सभी अतिथियों द्वारा हुआ।

शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री कपूरचंदजी देवेन्द्रकुमारजी चौधरी परिवार खनियांधाना द्वारा, मंच उद्घाटन श्री पुष्पेन्द्रजी जैन (कोयंबटूर) फिरोजपुर झिरका द्वारा एवं विधान का उद्घाटन श्री राजकुमारजी चौधरी परिवार नागपुर द्वारा संपन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में क्षेत्रीय विधायक श्री के.पी. सिंह (कक्काजू) एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. महेन्द्रजी ललितपुर उपस्थित थे। साथ ही विद्वत्गण डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली, ब्र.कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा एवं प्रशिक्षक अध्यापक मंचासीन थे।

सर्वप्रथम शिविर समिति के संयोजक श्री सुनीलजी 'सरल' ने खनियांधाना में शिविर आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सभी का

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

संकल्प दिवस के रूप में मनाया डॉ. भारिल्ल का जन्मदिन

खनियांधाना-शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ चेतन बाग स्थित नंदीश्वर जिनालय में चल रहे प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनांक 25 मई को तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का जन्मदिन संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर पूरे देश में फैले उनके हजारों शिष्यों में से बड़ी संख्या में शास्त्री विद्वान उपस्थित हुए व सभी ने आजीवन इस वीतरागी तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने की शपथ ली।

कार्यक्रम में डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, पण्डित राकेशजी शास्त्री, श्री प्रकाशचंदजी गुना, श्री केवलचंदजी जैन, श्रीमती गुणमाला भारिल्ल, अनुपमा जैन दुबई, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, श्रीमती मोना भारिल्ल आदि अनेक महानुभाव मंचासीन थे।

इस अवसर पर राजुल गर्ल्स ग्रुप की बालिकाओं ने डॉ. भारिल्ल द्वारा लिखित 82 पुस्तकों को लेकर यात्रा निकाली। साथ ही शिविर आयोजन समिति व अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के सैंकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने डॉ. भारिल्ल का शॉल, श्रीफल भेंटकर सम्मान किया। मुमुक्षु आश्रम कोटा की ओर से श्री प्रेमचंदजी बजाज, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री एवं पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा साफा, शॉल व श्रीफल से तथा महावीर ब्रह्मचर्याश्रम कारंजा की ओर से भरतजी भोरे व पण्डित आलोकजी शास्त्री ने शॉल, श्रीफल भेंटकर सम्मान किया।

पण्डित अभयकुमारजी, ब्र. अभिनन्दनजी, ब्र. हेमचंदजी ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने सभी स्नातकों को संकल्प दिलाया।

सभा को संबोधित करते हुए डॉ. भारिल्ल ने कहा कि जन्मदिन तो उनके मनाये जाते हैं, जिन्होंने इस जन्म मरण का नाश कर दिया है; ये तो संकल्प का दिन है। हमने भी आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के देहावसान पर यह

(शेष पृष्ठ 3 पर ...)

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यही सब सरला और सुनीता के चिन्ता के विषय थे। वे सोचती थीं कि इन सब समस्याओं का सामना हम कर भी सकेंगी या नहीं ?

यदि अन्य कोई आलम्बन हो, तब भी कोई राहत मिल सकती है, पर उन दोनों के आगे–पीछे भी कोई नहीं था। सास–ससुर का तो उन्होंने मुँह भी नहीं देखा था। वे तो रेल दुर्घटना में पहले ही स्वर्गवासी हो गये थे, संतानें अभी हुई नहीं थी। बिलकुल एकाकी शून्य जीवन था उनका।

भले ही उनके पति लम्बी बीमारी के कारण कुछ कमाई नहीं कर पा रहे थे, पर अब तक उनका साया उनके सिर पर होने से उनमें मनोबल था, उन्हें अपने सौभाग्यवती होने का गौरव था और परिस्थितियों से जूझने का साहस था। यद्यपि उनके पतियों की असाध्य बीमारी के कारण वे निराश थीं, पर किसी तरह गृहस्थी की गाड़ी तो खिंच ही रही थी; परन्तु उनके निधन से तो उनकी रही–सही हिम्मत भी टूट गई थी, पतियों का साया उठते ही उनके साहस का भी जनाजा निकल गया था। अब वे अपने को बहुत ही असहाय और दीन–हीन अनुभव कर रही थीं।

यद्यपि विद्या, विज्ञान और डॉक्टर दम्पति जैसे सज्जन और उदार व्यक्ति उन्हें काफी ढाढस बंधा रहे थे, पर वे अभी भी किंकर्तव्यविमूढ थीं। उनकी आँखों के आगे घरघोर अंधकार ही अंधकार छाया हुआ था। जीने के लिये कहीं भी कोई आशा की किरण दिखाई नहीं दे रही थी। उनका बार–बार मूर्छित हो जाना यह बता रहा था, मानो वे सदैव के लिए मूर्छित ही हो जाना चाहती हैं, मर ही जाना चाहती हैं।

वे सोच रही थीं अब जीवित रहकर करें तो करें भी क्या ?

नारी के जीवन में उत्साहपूर्वक जीने के दो ही तो प्रमुख कारण होते हैं – एक पति और दूसरे पुत्र–पुत्रियाँ, जिनके लिए वह अनेक कष्ट सहकर भी समर्पित रहती हैं। उनके आगे–पीछे अब कोई नहीं था; अत: वे पूरी तरह निराश हो चुकी थीं।

पति कैसा भी क्यों न हो, पर पति तो आखिर पति ही होता है। वह भी भारतीय नारी का। भारतीय संस्कृति में तो वैसे भी पति को परमेश्वर कहा जाता रहा है; न केवल कहा जाता है, माना भी जाता है। अत: पत्नियाँ अपने पतियों के प्रति पूर्ण समर्पित रहती हैं।

सरला और सुनीता के पति भी उनके लिये परमेश्वर तुल्य ही थे। उनके दुर्व्यसनों को वे परमेश्वर के द्वारा ली जा रही अपनी परीक्षा ही मान रही थीं। अत: उनकी बीमारी में उन्होंने उनके लिये क्या–क्या नहीं किया ? लोकनिन्दा की भी परवाह न करते हुये बचपन में प्राप्त अपनी नृत्यकला और संगीतकला द्वारा मित्रों का मनोरंजन करके भी आजीविका चलाई और उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति की। उन्होंने कभी भी अपने पतियों का न अनादर किया और न किसी से उनका अनादर होने दिया।

जिन परिस्थितियों में वे जी रही थीं और जिन लोगों से वे घिरी थीं, उन परिस्थितियों में कोई भी व्यक्ति कभी भी भटक सकता था, पथभ्रष्ट हो सकता था; पर वे कीचड़ में कंचन की भांति निर्लिप्त रहीं। रावण के घर में रही सती–सीता की भांति उन्होंने अपने सतीत्व को सम्पूर्णत: सुरक्षित रखा।

पर आरोप लगाकर बदनाम करने वाले धोबियों की तो न तब कमी थी, न अब है; सो जो जिसके मुँह में आया, इनके बारे में भी खूब कहा।

यद्यपि हॉस्टल में पढते समय एक बार संजू सुनीता की ओर आकर्षित हुआ था और उसकी सहज मंद–मंद मुस्कान से भ्रमित होकर उसके हंसने को प्रेम का संकेत समझकर, मिलने का आमंत्रण मानकर, प्रेमान्ध हो गर्ल्स हॉस्टल के बेकडोर से घुसकर सुनीता से मिलने की कोशिश में वहाँ की लड़कियों द्वारा कच्चे चोर की तरह पकड़ लिया गया था, घेर लिया गया था। उसे तभी तत्काल अपनी भूल का अहसास भी हो गया था कि वह तो उसकी नादानी पर हँसी थी, मूर्खता पर मुस्कराई थी।

यद्यपि सुनीता की वह मुस्कुराहट उस समय संजू को महंगी पड़ी थी, पर उस घटना से उसने बहुत बड़ा सबक सीख लिया था। तब से वह कभी किसी लड़की के चक्कर में नहीं पड़ा था। उसने उसी समय संकल्प कर लिया था कि मैं इन महिलाओं के स्वभाव को समझने में ऐसी भूल कभी नहीं करूँगा। (क्रमश:)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

टोडरमल स्नातक परिषद् का अधिवेशन संपन्न

खनियांधाना–शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 26 मई को पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद् का अधिवेशन संपन्न हुआ।

अधिवेशन की अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की। विद्वत्वर्ग में तत्त्ववेत्ता डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, ब्र. अचलजी ललितपुर, श्री शिखरचंदजी सागर, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ.राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा आदि विद्वत्गण मंचासीन थे।

मुख्य अतिथि श्री राजकुमारजी कोठादार अहमदाबाद एवं विशिष्ट अतिथि श्री अशोकजी सिंघई ग्वालियर, श्री संजीवजी जैन (एस.डी.एम.), श्री सुभाषजी मोदी विदिशा थे।

स्नातक परिषद् का परिचय पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने दिया। स्नातक परिषद् की उपलब्धियों का विवरण पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा ने दिया।

वक्ताओं के अन्तर्गत आलोकजी शास्त्री कारंजा, राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री अमायन, प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, प्रतीति पाटील जयपुर आदि ने अपने विचार व्यक्त किये।

मंगलाचरण पण्डित एकत्वजी शास्त्री खनियांधाना ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

स्वागत किया तथा प्रशिक्षण शिविर की कार्यप्रणाली श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने बताई। तत्पश्चात् ट्रस्ट के महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ट्रस्ट का संक्षिप्त परिचय दिया।

इसी अवसर पर भ.महावीर के चित्र का अनावरण श्री अनूपजी नजा ललितपुर, आ.कुन्दकुन्द के चित्र का अनावरण श्री सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री बिरधीचन्दजी इंजी. चन्देरी एवं गुरुदेवश्री के चित्र का अनावरण श्री पवनजी ललितपुर द्वारा संपन्न हुआ।

कार्यक्रम में विधायक श्री के.पी. सिंह ने अपने उद्बोधन में कहा कि मेरे क्षेत्र में जैन समाज का इतना बड़ा आयोजन होना गौरव की बात है; छोटे से नगर में शिविरार्थियों को कोई परेशानी नहीं हो ये मेरी भी जिम्मेदारी है तथा यहाँ से जो भी शिविरार्थी सीखें उसका प्रचार–प्रसार संपूर्ण भारतवर्ष में करेंगे, ये अत्यंत प्रसन्नता की बात है। इसके अतिरिक्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने अपने वक्तव्य में शिविर की उपयोगिता व रूपरेखा पर विचार रखते हुए इसका महत्व बताया।

सभा का संचालन पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली ने किया। मंगलाचरण पण्डित अभयकुमारजी ने एवं दैनिक कार्यक्रमों की रूपरेखा पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने प्रस्तुत की।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का –

41वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

खनियांधाना–शिवपुरी (म.प्र.) : यहाँ चेतन बाग स्थित नंदीश्वर जिनालय में चल रहे प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत दिनाँक 27 मई को अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का 41वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ।

इस अधिवेशन की अध्यक्षता श्री विपिनजी शास्त्री मुम्बई ने की। मुख्य अतिथि श्री प्रभातजी झा (राज्यसभा सांसद एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बीजेपी) व श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर एवं विशिष्ट अतिथि श्री मनोजजी बंगेला सागर, श्री अशोकजी बोरीवली–मुम्बई, श्री अजितजी बड़ौदा, श्री सुशीलजी कोलकाता, श्री अशोकजी भोपाल, श्री अशोकजी जबलपुर, श्री अशोक वैभव छिन्दवाड़ा थे।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा मंगलाचरण किया गया। तत्पश्चात् श्री विजयजी बड़जात्या (अध्यक्ष–मध्यप्रदेश) ने मध्यप्रदेश फैडरेशन की एवं श्री राजकुमारजी शास्त्री (मंत्री–राजस्थान प्रदेश) ने राजस्थान प्रदेश की रिपोर्ट प्रस्तुत की। श्री विपिनजी शास्त्री मुम्बई द्वारा अध्यक्षीय भाषण हुआ। इस अवसर पर पण्डित महावीरजी पाटील सांगली एवं डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर के अतिरिक्त छिन्दवाड़ा, इन्दौर, भिण्ड, बण्डा, ग्वालियर, जबलपुर, भोपाल, विदिशा, मुजफ्फरनगर आदि शाखाओं को प्रशस्ति–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल (राष्ट्रीय महामंत्री–अ.भा.जैन युवा फैडरेशन) ने फैडरेशन की स्थापना, उद्देश्यों और कार्यक्रमों का विस्तृत परिचय दिया।

इस अवसर पर विद्वानों के अन्तर्गत ब्र. सुमतप्रकाशजी, ब्र. अचलजी, पण्डित अभयकुमारजी, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित कमलचंदजी, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल, ब्र.श्रेणिकजी के अतिरिक्त फैडरेशन के अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल (उपाध्यक्ष), शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल (मंत्री), विपिनजी शास्त्री मुम्बई (उपाध्यक्ष), पीयूषजी शास्त्री (संगठन मंत्री), धर्मेन्द्रजी शास्त्री (प्रचार मंत्री) आदि उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री राजकुमारजी पडहार, श्री सुनीलजी सरल, श्री दीपकजी व्या, श्री सोमिलजी शास्त्री भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

संकल्प लिया था – ''जब तक यह देह रहेगी तब तक जिनशासन के इस तत्त्वज्ञान को जन–जन तक पहुंचायेंगे और आज भी संकल्पित हैं। यही कार्य मेरे 850 शिष्य कर रहे हैं, जिससे पंचम काल के अन्त तक जिनशासन की यह पवित्र ध्वजा लहराती रहेगी।'' उन्होंने कहा कि मरण के समय धर्म करने का नाम समाधि–मरण नहीं है; बल्कि पूरे जीवन में धर्म रहेगा तभी उस जीव का समाधि–मरण हो सकता है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर की उपाध्याय वरिष्ठ परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में समर्थ जैन विदिशा एवं दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी को पुरस्कृत किया गया।

सभा का संचालन संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने किया।

क्या हम सही मार्ग पर हैं ?

सत्य क्या है ?

जो सभी एक दूसरे से भिन्न व परस्पर विरुद्ध हैं, वे सभी तो सच हो नहीं सकते हैं न !

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

अनादिकाल से अपने सम्यक् स्वरूप को भूलकर हम सभी मात्र विरासत में मिली हुई **अपनी सांसारिक परम्पराओं का अनुसरण और पालन करते हुए निरंतर अपना संसार बढाने के अभियान में जुटे हुए हैं।** क्या अब भी हम यही सब करते रहेंगे ?

हमें यह विचार क्यों नहीं आता है कि संसार की परम्पराओं का अनुसरण करते हुए हम सभी अब तक जो कुछ भी करते आये हैं उसका परिणाम तो हमारे सामने है। आज हमारी जो दुर्दशा हो रही है वह हमारी इसी प्रवृत्ति का तो परिणाम है न ! क्या हम नहीं चाहते हैं कि हमारी इस परिस्थिति में परिवर्तन हो ? यदि हाँ, तो क्यों नहीं हम अपनी इस नीति पर पुनर्विचार करते हैं ?

''यदि हम अब भी वही सब करते रहेंगे जो अब तक करते आये हैं तो हमारे साथ वही होता रहेगा जो अब तक होता आया है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी दशा बदले तो निश्चित ही हमें अपनी दिशा बदलनी ही होगी।''

यदि अभी नहीं तो कब ? हम कब अपनी दिशा बदलने का, अपने लिये सही दिशा निर्धारित करने का प्रयास करेंगे ?

अत्यंत आवश्यक एवं उचित तो यही है कि हम प्रथम प्राथमिकता के साथ तत्काल इस कार्य में जुट जाएँ।

अपनी स्थापित मान्यताओं को बदलना और तर्क और युक्ति के अवलंबन एवं आगम के अभ्यास द्वारा सही मार्ग का चुनाव करना कोई साधारण कार्य नहीं वरन् तीव्रतम पुरुषार्थ का कार्य है। यह कार्य अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं के साथ, सम्पूर्ण जाग्रत अवस्था में किया जाना ही संभव है, अन्यथा नहीं।

सिर्फ मार्ग का निर्धारण ही पर्याप्त नहीं है वरन् उस पर आगे बढना भी महत्वपूर्ण है। आगे बढने से मेरा तात्पर्य सिर्फ चल पड़ने मात्र से नहीं वरन् किसी महत्वपूर्ण पड़ाव तक पहुँचने से है। इसके लिए सतत् साधना की आवश्यकता है जो कि समय साध्य भी है, इसलिये यह भी महत्वपूर्ण है कि सही दिशा के निर्धारण के पश्चात् हमारे पास इसी जीवन में उक्त मार्ग पर आगे बढने के लिये पर्याप्त अवकाश रहे।

हमारी विडम्बना यह है कि बिना सोच–विचार किये, हम सभी को अपनी–अपनी वंश परम्पराओं और पारिवारिक विरासत पर बड़ा गर्व है। हम उन्हें बड़े ही जतन से सहेजते हैं और उन्हीं से चिपके रहना चाहते हैं।

कौन सही है और कौन गलत व क्यों, इसकी चर्चा तो हम करेंगे ही पर एक बात तो तय है और बिना किसी मीनमेख के सभी को स्वीकार करनी होगी कि **एक दूसरे से भिन्न तथा परस्पर विरुद्ध होने से सभी परम्पराएं तो सत्य हो नहीं सकती हैं।** ऐसे में हमारी पूर्वजों द्वारा स्थापित पुरातनकाल से (अनेक पीढियों से) चली आ रही परम्परा मात्र इसलिये सही व कल्याणकारी नहीं हो सकती है कि वह पुरानी और अनुभूत है। **यह तर्क भी मान्य होने लायक नहीं है कि ''हमारे पूर्वज क्या मूर्ख थे ?''**

जब लगभगमात्र किसी एक को छोड़कर सभी का या समस्त परम्पराओं का ही गलत साबित होना तय है तब अपने पूर्वजों के विवेक और बुद्धिमत्ता को इस तरह सरेआम दाव पर लगाना उचित नहीं है। यूं भी जब हमारे पास तर्क–युक्तियों तथा प्रत्यक्ष प्रमाण मौजूद हों तो **कौनसी बात किसने कही है और वह कितना बुद्धिमान, शिक्षित और हमारा सम्माननीय व शुभचिंतक है यह किसी बात के सच्चे और अच्छे होने का आधार नहीं हो सकता है।**

अपनी धार्मिक आस्थाओं और तत्संबंधी रीति–रिवाजों के पक्ष में हम अपने जिन पूर्वजों और परम्पराओं की दुहाई देते हैं, **आखिर उनकी अन्य कौनसी मान्यताओं, आज्ञाओं, संस्कारों, परम्पराओं, रीति–नीति और खान–पान तथा जीवन–शैली पर आज हम कायम हैं ? हमने सबकुछ तो छोड़ दिया है,** अपने विवेक, तथाकथित विकास और प्रगतिशीलता के नाम पर सभी को तो तिलांजलि दे दी है, **तब सिर्फ धर्म ही क्यों अपने विवेक की कसौटी पर कसे जाने से रह जाता है ?**

यदि हम कुल की परम्परा को ही महत्व देना चाहते हैं तो अपने जिस कुल की परम्परा पर हम गर्व करते हैं व जिससे हम चिपके रहना चाहते हैं, उसमें तो स्वयं के कल्याण हेतु संन्यास का विधान है और संन्यास के अन्तर्गत व्यक्ति को अपना नाम, कुल, परिवार, घर आदि सब कुछ त्याग देना होता है। जब यह सब कुछ त्याग ही दिया तो फिर इनकी परम्परा हमारी परम्परा कैसे रहेगी ?

उक्त **संन्यास का विधान मात्र किसी एक धर्म में नहीं वरन् मात्र कुछ –कुछ भिन्नताओं के साथ संसार के सभी प्रमुख धर्मों में है,** जिसके अन्तर्गत व्यक्ति अपने नाम सहित अपने कुल व घर परिवार में अपने अधिकार और उनके प्रति अपने कर्तव्यों से मुक्त हो जाता है। जैसा कि हम पहिले ही कह चुके हैं कि **संसार में पाये जाने वाले विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों, वंश और कुलों की मान्यताएं और परम्पराएं पृथक्–पृथक् व एक दूसरे के विपरीत होने से सभी तो सत्य हो ही नहीं सकती हैं। यदि हो तो उनमें से कोई एक सत्य हो पर बाकी अन्य सभी तो निश्चित ही मिथ्या होंगी ही। इस स्थिति में इस बात की क्या गारंटी है कि उन सबमें से मात्र हमारी परम्परा ही सम्यक् है ?** यदि ऐसा है तो हम कैसे बिना परीक्षा किये, बिना अपने विवेक का उपयोग किये मात्र अपनी परम्परा से ही चिपके रह सकते हैं ?

उक्त सन्दर्भ में पण्डित टोडरमलजी तो यहाँ तक कहते हैं कि **सांचे धर्म को भी अगर मात्र कुल परम्परा के कारण स्वीकार किया जाता है**

तो वह उचित नहीं है।

जरा विचार तो कीजिये कि **काश हम इस कुल में नहीं जन्मे होते और कदाचित् इससे विपरीत मान्यताओं और परम्पराओं वाले उस अन्य कुल में जन्मे होते जिसे आज हम नितान्त गलत मानकर जिसके प्रति घृणा और द्वेष रखते हैं, तो क्या अपनी इसी नीति के अनुसार उसे ही सत्य न मान बैठते, उसका ही पालन नहीं करते ?** क्या यह भी उचित ही होता ? यदि नहीं तो इस बात की क्या गारंटी है कि आज अपनी कुल परम्परा के अनुरूप हम जिस मार्ग पर चल रहे हैं, जिस धार्मिक मान्यता का पालन कर रहे हैं वह सत्य ही है ?

मेरा आधारभूत प्रश्न तो यह है कि हम किस मार्ग पर चलें, किस धर्म का पालन करें। हमारी मान्यता क्या हो ? इसका नियामक कौन होना चाहिये ? हमारी कुल परम्परा, किसी की आज्ञा या हमारा स्वयं का विवेक ?

आखिर यह हमारे हित की बात है, इसका सीधा सम्बन्ध हमारे हित व अहित से है। हित अहित भी मात्र क्षणिक या तत्कालीन नहीं वरन् दीर्घकालीन, अनंतकालीन !

अगर आज हमने अपने लिये सही एवं कल्याणकारी मार्ग का चुनाव नहीं कर लिया तो यह अनादिकालीन परिभ्रमण यथावत जारी रहेगा। जिस कुल और परम्परा से आज हम चिपके हुये हैं, वह कल फिर बदल जायेगा; तो क्या अपने कुल के परम्परा का पालन करने की अपनी नीति के अनुरूप हम फिर नहीं बदल जायेंगे, अपने नए कुल की परम्परा का पालन नहीं करने लगेंगे, एक बार फिर वही विवेकहीन अन्धानुकरण ?

कल तक जिसका पोषण कर रहे थे, आज उसी का अनुसरण करने लगेंगे और जिसका विरोध कर रहे थे उसका पोषण करने में जुट जायेंगे, जी–जान से।

आखिर इसका अंत कब आयेगा ? **(क्रमशः)**

स्मारक की गतिविधियाँ You tube पर

पण्डित टोडरमल स्मारक में होने वाले प्रत्येक प्रवचन को अब आप You tube पर सुन सकते हैं। हर वीडियो की description में एक लिंक दी गयी है, जिस पर जाकर उस विषय की पीडीएफ भी डाउनलोड की जा सकती है। Ptst के You Tube Playlists पर जायें और अभी तक हुए सभी प्रवचनों का व्यवस्थित क्रमशः विषय के अनुसार भी अध्ययन कर सकते हैं।

नोट :– You Tube Channel Subscribe करें और 🔔 बेल (घंटी) आईकॉन पर क्लिक करना ना भूलें। इससे आपको पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में होने वाले सभी कार्यक्रमों के अपडेट (Notification) निरंतर मिलते रहेंगे।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

9 जून से 9 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
16 से 20 जुलाई	चैतन्यधाम–अहमदाबाद	गुरुवाणीमंथन शिविर
23 जुलाई से 1 अग.	जयपुर	महाविद्यालय शिविर

श्रुतपंचमी पर्व सानन्द संपन्न

(1) जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में श्री वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल द्वारा दिनांक 30 मई को श्रुतपंचमी पर्व मनाया गया। अनेक पुरुषों एवं महिलाओं ने सिर पर जिनवाणी धारणकर अत्यंत उत्साह एवं उमंग के साथ शोभायात्रा के रूप में स्मारक की तीन परिक्रमा की। तत्पश्चात् श्रुतस्कंध की विशेष पूजन पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री द्वारा कराई गई। इस अवसर पर प्रातः पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ द्वारा श्रुतपंचमी पर विशेष प्रवचन का लाभ मिला।

– अध्यक्ष, वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल

(2) दुबई (यू.ए.ई.) : यहाँ दिनांक 28 मई को श्रुतपंचमी पर्व मनाया गया। कार्यक्रम में अधिक से अधिक साधर्मीजन भाग ले सकें, इसलिये रविवार को यह कार्यक्रम रखा गया। सर्वप्रथम महिलाओं द्वारा सजाई गई जिनवाणी की स्थापना कर भक्तिभाव के साथ जिनवाणी पूजन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर स्थानीय विद्वान डॉ. नीतेशजी शाह द्वारा श्रुतपंचमी की कथा पर विस्तृत चर्चा की गई। पाठशाला के बच्चों द्वारा भी प्रस्तुतियाँ दी गईं।

You tube पर जैनधर्म सीखें

बालबोध पाठमालाओं को आधार बनाकर णमोकार मंत्र एवं जैनधर्म की आधारभूत बातें सीखने के लिये अब **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** के वीडियो प्रवचन You tube पर उपलब्ध हैं। आप You tube पर जाकर dr. Sanjeev Godha channel से इसका लाभ ले सकते हैं। आप स्वयं लाभ लें एवं जैनधर्म सीखने की इच्छा रखने वालों को बताएं। अधिक जानकारी हेतु श्री सात्विक जैन से 7610027910 पर अथवा 9829064980 पर संपर्क करें।

विपिनजी का परिवर्तित कार्यक्रम

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा का विदेश कार्यक्रम पूर्व में प्रकाशित किया जा चुका है। पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर का परिवर्तित कार्यक्रम निम्नानुसार है –

दिनांक 9 से 11 जून– Dallas TX, 12 से 15 जून–Raleigh NC, 16 से 18 जून–Houston TX,19 से 22 जून–Dallas TX, 23 से 30 जून–Cleveland OH, 1 से 4 जुलाई –JAINA Convention-New Jursy, 5 से 8 जुलाई–JAANA Shivir-NewYork, 9 से 14 जुलाई– Chicago

वैराग्य समाचार

सागर (म.प्र.) निवासी पण्डित कपूरचंदजी भाईजी का दिनांक 23 मई को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप अत्यंत स्वाध्यायी एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्य भक्त थे; मुमुक्षु समाज के वयोवृद्ध विद्वान एवं सागर मुमुक्षु मण्डल के स्तंभ थे।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति के दुःखों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हो – यही मंगल भावना है।

दृष्टि का विषय

34 नौवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

दृष्टि के विषय में गुण का भेद, प्रदेश का भेद, काल का भेद - आदि कोई भी भेद शामिल नहीं है। लोगों को ऐसा लगता है कि गुणों और प्रदेशों में से मात्र उनका भेद निकाला है और गुणों व प्रदेशों को रख लिया है, जबकि पर्यायों को दृष्टि के विषय में से सम्पूर्णतया निकाल दिया है।

अरे भाई ! **ऐसा नहीं है, जिसप्रकार गुणभेद, प्रदेशभेद को पर्यायार्थिकनय का विषय होने से दृष्टि के विषय में से निकाला है; उसीप्रकार पर्यायभेद को भी दृष्टि के विषय में से निकाला है। अनुस्यूति से रचित पर्यायों का प्रवाह तो दृष्टि के विषय में शामिल ही है।**

इसी संदर्भ में मैं एक बात और कहना चाहता हूँ कि जिनवाणी में कथन किसप्रकार होता है।

जिनवाणी में द्रव्यों के नामों का उल्लेख छह द्रव्यों के रूप में भी आता है और दो द्रव्यों के रूप में भी आता है। छह द्रव्यों के नाम जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल हैं और इन्हीं का दो द्रव्यों के रूप में उल्लेख हमें द्रव्यसंग्रह में मिलता है -

जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं।
देविंदविंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा।।[१]

इस गाथा में जीव और अजीव के रूप में दो द्रव्यों के नाम कहे हैं। लेकिन इन दोनों कथनों में परस्पर कोई विरोध नहीं है; क्योंकि पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल - ये पाँच द्रव्य अजीव ही हैं।

द्रव्यों में तो छह द्रव्यों को दो द्रव्यों के रूप में कहा जा सकता है; लेकिन तत्त्व व्यवस्था में सात तत्त्वों को जीव-अजीव इन दोनों को दो तत्त्वों के रूप में नहीं कहा जा सकता है।

तत्त्वार्थसूत्र में आचार्य उमास्वामी ने सात तत्त्वों में जीव, अजीव के बाद पृथक् से आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, मोक्ष का उल्लेख किया है, इससे स्पष्ट होता है कि आस्रवादि तत्त्व अजीव में शामिल नहीं हैं।

१. द्रव्यसंग्रह, गाथा १

वस्तुव्यवस्था में जहाँ द्रव्यों में पुद्गलादि पाँच द्रव्यों को अजीव में शामिल किया है, वहीं तत्त्वव्यवस्था में आस्रवादि तत्त्वों को अजीव में शामिल नहीं किया है।

इसका कारण यह है कि द्रव्यों में जो पुद्गल द्रव्य है, वह अजीव ही है, इसलिए उसको अजीव में शामिल किया जा सकता है; लेकिन आस्रव अजीव ही नहीं है, उसमें द्रव्यास्रव पुद्गलरूप होने से अजीव है और भावास्रव तो जीव का परिणाम है।

तत्त्वार्थसूत्र में छठवें अध्याय में **जीवाजीवाधिकरणं च** सूत्र है, इस सूत्र में यह कहा है कि आस्रव के दो अधिकरण (आधार) हैं - जीव और अजीव अर्थात् आस्रव के द्रव्यास्रव और भावास्रव - ये भेद न करके जीवास्रव और अजीवास्रव - ये दो भेद किए। ऐसे ही बंधादिक के भी जीवबंध, अजीवबंध, जीवसंवर, अजीवसंवर, जीवनिर्जरा, अजीवनिर्जरा, जीवमोक्ष, अजीवमोक्ष - ऐसे भेद किये हैं।

यदि आस्रवादिक को जीव या अजीव में शामिल करना हो तो उनके उपर्युक्त प्रकार से भेद करने पड़ेंगे, तभी जीवास्रव को जीव में, अजीवास्रव को अजीव में, जीवबंध को जीव में, अजीवबंध को अजीव में - इसप्रकार शामिल कर सकेंगे।

हम द्रव्यों की तरह तत्त्वों को बिना उत्तर भेद किए अजीव में शामिल नहीं कर सकते।

तत्त्वव्यवस्था में सात तत्त्व इसलिए बन गए; क्योंकि आस्रवादिक पर्यायों में से जीव की पर्यायों को जीव में शामिल करना चाहिए और अजीव की पर्यायों को अजीव में शामिल करना चाहिए; लेकिन ये आस्रवादिक पर्यायें पर्यायार्थिकनय का विषय हैं, द्रव्यार्थिकनय का विषय नहीं हैं; अतः द्रव्यार्थिकनय का विषय अलग करने के लिए पर्यायों को अलग रखना चाहिए, इसीलिए आस्रवादिक पर्यायों को जीव-अजीव में शामिल न करते हुए तत्त्वव्यवस्था में आस्रवादि तत्त्वों को अलग ही रखा।

यदि आस्रवादिक के जीवास्रव, अजीवास्रव भेद करके जीव-अजीव में शामिल करते हैं तो वह जीव, दृष्टि का विषयभूत जीव नहीं रहेगा; जिसके आश्रय से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है; क्योंकि जीवास्रवादि जीव में शामिल करने से राग और मिथ्यात्व भी शामिल होते हैं, पर्याय भी शामिल होती है; इसलिए दृष्टि के विषयभूत जीव में से इन सभी को अलग रखने के लिए आस्रवादिक

जीव-अजीव से भिन्न तत्त्व कहे गये।

इसप्रकार दृष्टि का विषयभूत जीव, अजीव और आस्रवादिक से भी भिन्न है। यदि जीव को मात्र अजीव से भिन्न कहते हैं तो अजीव में द्रव्यास्रवादिक ही शामिल हैं, भावास्रवादिक नहीं।

अतएव दृष्टि के विषयभूत द्रव्य में से भावास्रवादिक को भी निकालने के लिए उसे आस्रवादिक से भी भिन्न कहा। दृष्टि का विषयभूत द्रव्य तो भावमोक्ष अर्थात् मोक्षपर्याय से भी भिन्न है; इसलिए मोक्ष को भी जीव में शामिल नहीं किया।

जो अजीव और आस्रवादिक, इन सबसे भिन्न है - ऐसे जीव को दृष्टि का विषय बनाने पर सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होगी।

अरे भाई ! वस्तुस्वरूप के प्रतिपादन के लिए द्रव्यव्यवस्था है; आत्मकल्याण के लिए तत्त्वव्यवस्था है। यह तत्त्वचर्चा अध्यात्म का अंग है और द्रव्यचर्चा सिद्धान्त का अंग है।

अत: सभी पर्यायों को तत्त्वव्यवस्था में अलग स्थान मिला है।

तत्त्वव्यवस्था में सातों तत्त्वों के अलग-अलग होने को हम इस उदाहरण से अच्छी तरह समझ सकते हैं। अमेरिका में यदि एक परिवार में मिया-बीबी सहित उनके दो बच्चे रहते हैं, तो उनके मकान में कम से कम पाँच बेडरूम होते हैं, यहाँ तक कि दो वर्ष के अथवा एक वर्ष के बच्चे का भी अलग से बेडरूम होता है। वहाँ ४ वर्ष के लड़के का अलग कमरा होता है और ६ वर्ष के लड़के का अलग कमरा होता है, यदि वे एक-दूसरे के कमरे में जाते हैं तो पूछकर जाते हैं और एक-दूसरे के कमरे में किसी के सामान को छूते भी नहीं हैं। यदि दो वर्ष का बच्चा भी अपने माँ-बाप के कमरे में जाएगा तो पूछकर जाएगा अर्थात् दरवाजा खटखटा कर जाएगा, उन बच्चों को इस बात की ट्रेनिंग दी जाती है। अत: उस बच्चे को उसके मम्मी-पापा अपने कमरे में आने से तभी मना कर सकते हैं, जब उसे उसका अलग कमरा और सारी व्यवस्थाएँ दी जाएँ। यदि उसके कमरे में सारी सुख-सुविधाएँ नहीं होंगी तो उसके मम्मी-पापा न तो अपने कमरे में आने से रोक सकते हैं और न ही उससे यह कह सकते हैं - जब भी आओ, पूछकर आना। वह बच्चा तो अपने मम्मी-पापा के कमरे में जाएगा ही।

उसीप्रकार मैं यह कहता हूँ कि तत्त्वव्यवस्था में जब पर्यायों को अर्थात् आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष को अलग-अलग तत्त्व कहकर जीव और अजीव से अलग कर दिया है तो फिर ये जीव और अजीव में क्या शामिल होंगे?

द्रव्यव्यवस्था में तो ये जीव और अजीव में ही शामिल होंगे; क्योंकि वहाँ इनकी कोई अलग व्यवस्था नहीं है; लेकिन तत्त्वव्यवस्था में इनके जीव-अजीव में शामिल होने की समस्या ही नहीं है; क्योंकि **इन्हें पृथक् तत्त्व बना दिया है। आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा और मोक्ष - इनमें जीव-अजीव की सभी पर्यायें शामिल हैं।**

निगोद से लेकर मोक्ष तक जीव की समस्त विकारी और अविकारी पर्यायें - इन आस्रवादिक तत्त्वों में शामिल हैं। इन आस्रवादिक के अलावा जीव की ऐसी कोई भी पर्याय नहीं है, जिसमें हम जीव में शामिल करना चाहें।

कहने का तात्पर्य यह है कि समस्त विकारी और अविकारी पर्यायें आस्रवादिक पाँच तत्त्वों में ही शामिल है, जीव में शामिल नहीं है।

समस्त विकारी और अविकारी पर्यायों से रहित जीवतत्त्व ही द्रव्यदृष्टि का विषय है। यही सम्पूर्ण कथन का सार है।

उक्त सम्पूर्ण विवेचन से यह बात उभर कर सामने आती है कि दृष्टि के विषयभूत भगवान आत्मा में पर्यायार्थिकनय की विषयभूत सभी पर्यायों में से कोई भी पर्याय शामिल नहीं है।

ध्यान रहे पर्यायार्थिकनय के विषय में गुणभेद, प्रदेशभेद और कालभेद - सभी आ जाते हैं, लेकिन इन पर्यायों का अनुस्यूति से रचित प्रवाह नहीं आता है।

इन पर्यायों से पार भगवान आत्मा के आश्रय से सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप निर्मल पर्यायों की उत्पत्ति होती है; मोक्षमार्ग का प्रारंभ होता है, मोक्ष होता है; इन्हीं पर्यायों से पार भगवान आत्मा में अपनापन स्थापित होने का नाम सम्यग्दर्शन, इसे निज जानने का नाम सम्यग्ज्ञान और इसमें ही जमने-रमने का नाम सम्यक्चारित्र है, शेष सब उपचारहै।

सभी भव्यात्मा दृष्टि के विषयभूत भगवान आत्मा को जानकर, पहचानकर; उसी में जमकर-रमकर पर्याय में परमात्मपद प्राप्त कर सुखी हों - इस भावना के साथ विराम लेता हूँ। ●

विभिन्न स्थानों पर ग्रुप एवं बाल संस्कार शिविर संपन्न

(1) सागर (म.प्र.) : यहाँ परकोटा स्थित श्री महावीर जिनालय में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, शाखा बण्डा, के.के.पी.पी.एस. उज्जैन एवं कुन्दकुन्द पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में बुंदेलखण्ड के 31 स्थानों पर एक साथ हुये ग्रुप शिविर का उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर द्वारा प्रवचन हुये। शिविर में विभिन्न स्थानों पर 40 विद्वानों द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला।

शिविर में संयोजन एवं समन्वयन कार्य रितेशजी इन्दौर, राहुलजी शास्त्री बण्डा, संजय सिद्धार्थजी इन्दौर, मयंकजी शास्त्री बण्डा, सम्मेदजी जैन इन्दौर एवं अन्य सहयोगियों ने किया। आभार प्रदर्शन श्री विकासजी मोदी ने किया।

(2) जबलपुर (म.प्र.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 7 से14 मई तक अष्टम आवासीय जैनत्व बाल संस्कार शिविर संपन्न हुआ।

शिविर का उद्घाटन दिनांक 7 मई को मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री नेमीचंदजी जैन सुनीलकुमारजी जैन पायल परिवार द्वारा किया गया।

इस अवसर पर जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् प्रात: एवं दोपहर को वर्गवार सामूहिक कक्षाओं का आयोजन हुआ। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के अतिरिक्त रात्रि में विभिन्न ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। इसमें विरागजी शास्त्री द्वारा संगीतमय कथा मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही। शिविर में जबलपुर, शहपुरा, जबेरा, कटनी, कटंगी, पनागर, इन्दौर, बिलासपुर, दमोह, सागर आदि अनेक नगरों के लगभग 350 बालक-बालिकाओं ने लाभ लिया।

इस अवसर पर श्री विरागजी शास्त्री, श्री अनुभवजी जैन करेली, श्री राजेन्द्रजी जैन खड़ैरी, श्री प्रियंकजी शास्त्री रहली, डॉ. मनोजजी जैन, ब्र. श्रेणिकजी जैन, श्री संतोषजी शास्त्री आदि टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर के छात्रों, आत्मार्थी कन्या विद्या निकेतन दिल्ली व शाश्वत धाम उदयपुर की 6 बालिकाओं सहित कुल 22 विद्वानों ने 17 कक्षाओं में अध्यापन कार्य किया। शिविर की सफलता में फैडरेशन एवं वीतराग विज्ञान मण्डल के सभी कार्यकर्त्ताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

(3) औरंगाबाद (महा.) : यहाँ श्री आचार्य कुन्दकुन्द जैन मेमोरियल सेवाभावी संस्था और स्वानुभव मण्डल औरंगाबाद के तत्त्वावधान में मुमुक्षु मण्डल के सहयोग से सिडको में दिनांक 23 से 30 मई तक आध्यात्मिक बाल-युवा-प्रौढ शिविर एवं डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित प्रवचनसार मण्डल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा विधान के आधार से प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: पण्डित संजयजी राउत द्वारा तत्त्वज्ञान की कक्षा एवं दोपहर में ब्र. जिनल बेन मुम्बई द्वारा पंचपरावर्तन की कक्षा ली गई। साथ ही बच्चों के लिये विभिन्न कक्षायें एवं सामूहिक कक्षा भी आयोजित की गई।

रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् ब्र. अभिनन्दनकुमारजी के अतिरिक्त पण्डित विवेकजी महाजन लालसोट, पण्डित गुलाबजी बोरालकर, पण्डित प्रदीपजी शास्त्री एलोरा, आत्मार्थी स्वरूपा राउत द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। व्याख्यान के उपरांत विरागजी शास्त्री द्वारा प्रथमानुयोग की कथाओं को रोचक ढंग से संगीत के साथ प्रस्तुत किया गया। इसके बाद आशीषजी शास्त्री टीकमगढ के निर्देशन में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुये।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी के निर्देशन में पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री सागर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित अमोलजी शास्त्री के सहयोग से संपन्न हुये। कार्यक्रम में श्री किशोरजी शास्त्री, श्री चिन्तामणिजी शास्त्री, श्री अक्षय अन्नदात्रे शास्त्री, श्री रत्नाकरजी गाडेकर का विशेष सहयोग रहा।

वेदी शिलान्यास संपन्न

सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ट्रस्ट मकरोनिया सागर के तत्त्वावधान में श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 6 से 8 मई तक भूतल पर वेदी शिलान्यास का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक एवं पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रकाशन तिथि : 28 मई 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com